

३
 चधीनि। अथ यथेते सूत्रे प्राच्य उ नामिष्टमप्राति॥ ॐ ह्यवग्रामगद्य पूर्ववर्हिना
 त्रिकानस्य संयुक्त पूर्व लादपि वालयुर्व॥ अथ धार्यायास्तु नी यया दयया दहा माया
 पुर्वा गाम् रुद्रास्यादिनि॥ ॐ नि सानुखा तस्याय कर्तु लो वर्लिद्युर्व॥ अथ धा॥
 अथ ललितपग विमालं त्रुप्तसनवाम कण वनमालं। सुवर्न विविकमालं सीतां
 दुर्गुङ्गामालं॥ ॐ ह्यस्या रुद्रिका श्यायाः॥ प्रथमपदा काक न गोत्रव माया दत्रा
 दार्या प्रथमपाद उयादहा मायाय लो गव शवका रुद्रास्यादिनि॥ अथ पितृ प्रथम
 रुनी ययदान कल धावा पुत्रुर्व॥ अथ धा॥ वक्र दुर्गुङ्गु अमितच ७ गदा हि द्याम

ASHA ARCHIVES

1.402

द्वय कल्पलता

नासा। विहारे विहारा ॥ अकण्ठं विहारी ॥ नारीणां ॥ मूर्तिस्ताना नारीणां। कृष्णाय
 जायते ॥ कुम्हारं अकण्ठं विहारी ॥ नरुतास्या मृगी ॥ सामृगी वाततो शबाधनं
 कम्पनं ॥ सामृगी वातनति कन्दामञ्जरी ॥ इति मञ्जरी ॥ ३ ॥ ॥ चतुर्नकायथा
 ॥ भाग्यकन्या ॥ गणालानां कन्याधन्या ॥ सा इति कन्या श्वलया ॥ खेरोत्तया सेका
 धन्या इति कन्या मञ्जरी ॥ लसयुगा ॥ तनूनिता ॥ विह्वता हलरुता ॥ विजयनं तनूनि
 जा ॥ अकण्ठं मधुनियुनिति कन्दामञ्जरी ॥ विवाजो ॥ विवाजो पदविना रुवाध्वं
 नमगतिशानलरुचधनमिना दिनरुनी विलसिनी तिगम्भु ॥ इति प्रथमः ॥

५ ॥ ॥ प्रियाकनायथा ॥ **लोनि** ॥ किं तन्वितवेषा दनकपर्पिकि ॥ दालिमबीज ॥ गुणि
 समाना ॥ कृष्णसनाथ ॥ कर्पिकि विहारी कन्दामञ्जरी ॥ नालगमूमा ॥ दानवाणिनी ना
 गयानिनी ॥ विद्यु नानिना पातुमामूमा ॥ ऊवभनवा इति गम्भु ॥ लज्जोऽपिया ॥ अति
 संकटा दिहसेवमी ॥ अकण्ठं प्रियायूतवेनिग ॥ उज्जुमूमा विलसत्कला ॥ इति कन्दाम
 मञ्जरी ॥ इति मञ्जरी ॥ ५ ॥ ॥ चतुर्नकायथा ॥ नायक ॥ नू मञ्जरी ॥ अरुता मूमा का
 ना नू मञ्जरी ॥ नयाधगता मूमा लि मूमात ॥ वालातनू मञ्जरी ॥ गणिवदनाथी
 ॥ गणिवदनाथी ॥ सनसिजनया ॥ मनसिजनकि ॥ यत्रियविधाय ॥ दनकचय ॥ गम ॥

निवदनामो ॥ इति कालिदासः ॥ दियामामनाजी ॥ महीपालतभा मनाजीवकीर्ति ॥ कय
 न्धकालान् दनकान् दिगर्क ॥ स्वर्ददुर्गुर्ग ॥ इति गीतुः ॥ मोघदसूमती ॥ गीलनयू
 वती ॥ धर्मादसूमती ॥ विद्यासुविनये र्ग्यसु सुलता ॥ सुयमिदं वृत्त नलाकनीय ॥ मो
 घदिशु नाला ॥ काना काना विद्या विद्या जीवकी ॥ दामाभषादति स्तान विद्यु नाला ॥
 इति गययीजाति ॥ ६ ॥ ॥ सफाकनायथा ॥ नयुगल गयूता ॥ रुवतिमधूमती ॥ मधून
 मलिलता ॥ वचनमधूमती ॥ इरुदनति ॥ मधूपतिद्वय ॥ नविद्विहृ तठ वनकसूम
 तति ॥ इति क्व दाम ऊली ॥ रुवकुसुगयूता ॥ कुमालेललितामो ॥ गवामनूचनकी नऊ

ख ३

वलित दहा ॥ रुवकुसुमतिमूर्ति ॥ कुमात्रललितामो ॥ अहान्नित्रम ॥ इति गीतुः ॥ भा
 गमसामदलखा ॥ गीत्रीपूज गजस्य ॥ अशु तठ ॥ रुकानां रुयदुली ॥ पायाधामद
 लखा ॥ विद्वद्भिर्मृगमय ॥ आकासामदल ॥ कालिदासः ॥ पार्वतीनजीतु ॥ पंचवाजकामि
 नीजु नूपगलिनी ॥ अयसी पून ॥ द्विष ॥ पार्वतीयसीदु ॥ राजहंस गमिनी ॥ इति गीतुः ॥
 इत्युष्टि जाति ॥ १ ॥ ॥ अथ अकना ॥ कथक ॥ अकना न गतां नूय कविरिपयत्रि ॥
 धिता ॥ अस्या रुदा ॥ गुण विद्यु नाला ॥ विजयदा तठ ॥ समीची चय माजी ॥ चयिनी पथ ॥ यामरु ॥
 मानवैक ॥ अहंस नूतमता ॥ नां विका मता ॥ विता नम नूय ॥ अतथा ॥ द्वादशी तय कीर्तिता ॥

सचिष्यवर्गं गुनैर्कयं चर्मलघुचक्रवर्गं समस्तस्य फलं कर्तुं विषमं गुनसागुणं ॥ त्रधाशास्त्रवतव
 ल्कगुणकाश्च धने निहविर्नवद्वन्द्वं वासीयेवजिधानमन्त्रनिशा ॥ उद्यकालनिर्गमसंघिन्नमिच्छे
 त्प्रकाशितं ॥ इति माद्यः ॥ लघुतीवर्षं वृद्धतिगुनतीवर्षं च विषमं तत्र लघुतीवर्षं निय
 तं याति स फलं ॥ उल्लिखमानस्य प्रानाथकृष्टपथमिच्छतेति माद्यः ॥ अथानुपूर्व्यापि चर्मस्य
 उन्मूल्यं वृष्टस्य फलं यत्नं कृत्वा विषमपदं उवदतिर्न वृष्टस्य फलं यत्नं वनयत्नं वि
 षमपदं उवति ॥ तथाच माद्यः समतावन्नतमदः प्रयत्नमस्त्वामपीति ॥ १ ॥ ॥ ज्योतिषो ज्यो
 त्मो विश्वमाता विना कुर्यादवदेव देशः ॥ तस्मै कृष्णं सावद्वक्त्रं रावेर्महा नृप नृणां वा ॥ वा ॥

नानाच विक्रयनी ॥ नद्युपतिन पिजातवदा विष्णुर्वायुगृह्य प्रियामिति कालिदासः ॥ ॥
 भारो नाया रुवति तदनुचोचसा विजलखा ॥ उवाधव्याजगति सूर्यत्री सायहा वि
 पुत्रयो यमोश्चक्रणमपिमिलितं दर्शयामासुकार्कं ॥ उतावत्याममसमृदिताः कृत्य
 विह्वानवन्तः सखादृष्टं दयितमस्मिन् नालमानं दुमिष्टाः ॥ १ ॥ कृतस्मिन् जगति
 मृगदृष्टी सा नृपयदासीति चक्रा मञ्जरी ॥ ॥ भासाजः सतसाजमनगदितं ॥
 इल्लिललितं ॥ कृत्वा विक्रमसमृद्धिं तनूः ॥ इल्लिललितं आवत्सारनमन्त्रं
 निरुतवान् वृत्तावनगर्तं ॥ यः कालीयमगर्वितं समकनात्ताण्डुमकुलं कृष्णं

ॐ समकतः सरगवान् चक्रा अतकनः ॥ कृत्वा कं समुगपवाक्रमविधिं गार्हपत्यललिग
 मिति कृन्दा मञ्जरी ॥ ॥ चन्द्रनभाय सोममनपदमि तिलो केन्द्रितं ॥ जाननसा रिवि
 स ददय नित्यमित्तो रुरुत्रै कलिकलामयममलपदमपि यानासु रते ॥ यश्चत
 सेव देवपत्रवशा वलिता पूषलता मरु कत्री नृही मचत्र गतत्र विमर्दपतिता ॥
 ॥ ॥ ॐ रुयदिरवुन्ना नाभाभा चन्द्रमाला किमो यो ॥ उत्रसियुगत्रतर्न्या वा
 कानखाका वलीयै मलज्ज नऊ सा प्रात्रया ड अति ऊरु काम ॥ विगदन् विजडालं म
 का हान स्वर्द्धनी स किमो लो जयति जगति सा ना दव ग शो न वा चन्द्रनखा ॥ ॥

५४
 ५॥ ॥ नानाविकारो लो ॥ अषात्रसात्रमञ्जरी नानाविकामनायुवः श्रयस्त्रिगालि
 संलसत्सारा मनाइनातिमः ॥ इवात्रवेतिवात्र गच्छति गच्छुः ॥ ॥ उतो वितानं गली च ॥
 उनीकनूपयस्त्रि मिरुस्त्रि रूषितं च ॥ मनायुवः कीर्त्तितान् वितानभतच्चकारु ॥ वितान
 माखीयदन्तगच्छे वृत्तनलाकने ॥ ॥ नायलाचनूयगः ॥ पापपूजसं दहिता काल
 सूर्यवद्वावतः ॥ रुद्रनसूत्रगयरा नरुमीवलना कका ॥ पाडसन्निनी इन्द्रा गच्छति
 गच्छुः ॥ ॥ उज्जगम्या गिष्ठुसुता वृत्तनवाकना ॥ उज्जगसंगता वाधमनिमं ध्य
 ततः परी ॥ तता रुद्रनसूत्रीया का वृत्तली पय रुद्रका ॥ ॥ उज्जगमिष्ठुसुता मोनः ॥

उजगलिष्ठुगायावृ. विपिनसुत्रनिर्वाह्या. उजगु कथमसौ कृष्ण. इति विमृशति नन्द
जी ॥ ऊदनिकटकाजीति कृष्णमञ्जरी ॥ ॥ वृहतिकाननो वारुवंगा गिरिसूताति मीला
लितं दहागिनभ्युत्थयदं। निवपदं युग्मनाश्च गे. वृहतिकामनिःश्वनः॥ कृष्णमि
शकदन्वनश्रा. इति लीला ॥ ॥ सज्जना उजगुसंगता ॥ अरिसानवल्मिहिका स्व
लइ उजगुसङ्गता। सुतनारुयिकनीनय ॥ समनकिनयकानर्ग ॥ यमूना उजगुसं
गतति कृष्णमञ्जरी ॥ ॥ स्यान्मनिमर्धं यहुमसाभा तन्मनिमर्धं दानमपि प्राणस
मातेसासूमुखी। नित्यमूनरुसंयधिया इवलेददा विक्षिपति ॥ चानूननरुसंयधिया

[illegible]

तिर्गुणः ॥ जागोचकुक्ता विर्लोकः ॥ विहिताहिताविनूकारुकिः ॥ याम विथविनूकारुवति ॥
 विष्णुकवल्कीनी तस्मान्नद्यात्मजवेधातर्हि ॥ मूनकविकवाल न नतासडा ॥ तिर्गुणः ॥
 ॥ वाता हनवसूलयुष्टिः ॥ ताना नूगक प्रदविनू ॥ तिर्गुणः ॥
 गायीयविषदिनाभवलिता विजाज ॥ तिर्गुणः ॥
 तिर्गुणः ॥ वशाद्य ॥ तिर्गुणः ॥
 गणिषीशयूनत्रपिकलयरुकिभूधर ॥ तिर्गुणः ॥
 हवकी ॥ तिर्गुणः ॥
 विना ॥ कलय ॥ तिर्गुणः ॥

११

घटितानं । दहतीरुददंममकामः ॥ सखिकिकप्रवेकथयत् ॥ नधिनातिहिम ॥
 नं । तिर्गुणः ॥
 ॥ यरुदविनमतिपांडुं ॥ सखावैरुवसूखसदीजं । गन्धर्वाः सपन ॥
 कोउतमतिमवक ॥ श्रुदोदी ॥ तिर्गुणः ॥
 उरुह्वविनगतिः ॥ श्रुतिघनपीनद्वर ॥ दलनमदसूखवती ॥
 तिर्गुणः ॥
 तिर्गुणः ॥

नाहि शुभमिजनश्चमलकं नित्यं पुद्गलविना सुपाठुनशा वासा वलु वड जवा लूना वृत्तिनी
 दुशा ॥ नृकवती सा शा मसगा ॥ थ ल्यश्च रि न व दस्यता ॥ यस्य रुवा नी पादसत्राज
 चतसिरुयातिष्ठति रुकिश नृकवती तं मन्दिन रुमिसुख्य वमू कि ह सुग गव ॥ चम्यक
 माल एपि नामास्या ॥ सा कथनीया चम्यक माल तिष्ठ तवा धशा गृह्या नृपवती तिना
 मनीशो ॥ ॥ दीपक माला चद्रमोज जो ॥ उडुट भा हा धा न सकट सत्य थ द फु यान
 चिकिता ॥ दीपक माला कि ह न र्क व ग पाद नखा ली भद्र दिप्रिया ॥ ॥ पद्मिनी

१२

॥ ॥ ना जाऊ गुनूत इ पस्मिता ॥ धर्त र्द दि त च न वामूर्ज इ ए न सुज ने ॥ खलू ये मनी क । लम्बी
 गृहिणी वद पस्मिता त वी रु व न खलू निग्नला ॥ दि णुं ग य न म व ला ह य मिति ण सुशा ॥
 नाय ऊ गुनू ॥ पं कि नू च त ॥ पं कि नू चिता वे प्ल वे नृ ह ए म रु त रु न वृ लू न म केश दी न नी न वि
 जाऊ रं स के पु रि त प ग प्र नि क व रि ॥ सव काल व द न न द श्र वृ ति नी दुशा वृ ति पी कि शा ॥
 अथे का द प दि ना क ॥ ॥ वृ ह द ना पं तु य जा पं जा ति वि वि धा त त श वि य नी त य व चित त
 स त म द्या ना न थ द्ध ता । सू सू खी सा ली नी व द्या ता मी च त ए म दि ता । उ म ना या विल सि

विपरीतयुद्धीकथं वदेष्टुं सखिपयलखा । कथयति काचित् कुकुरं वपुः दन्तमिह न कवरीस
 मर्क ॥ तथा च माया ॥ कार्कशं नृपाकाश्च न वयराता न वयराता ॥ नृपाका मणीनी ॥ ॥ नृपाका
 यदि न ॥ थद्वता उनुशा यं उने उने निलोचना ॥ नृपाका मणीनी ॥ नृपाका मणीनी ॥ नृपाका मणीनी ॥
 तिनाऊसूदनी वंगता नतिमना न ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥
 लयिपूकृतं ॥ तिर्णकनमिष्टमणी ॥ ॥ नलरुगमसूम्बी ॥ नलरुगमसूम्बी ॥ नलरुगमसूम्बी ॥
 ना हिमकनविमलसद्वदना ॥ सूकृतकृत ॥ खलुकस्य दृढकथं विवो मणीनी ॥ सूम्बी ॥
 हविमवला कचवृम्ब विनमिति कथामपुत्री ॥ ॥ भाग्येयो यच्छालिनी सायसिद्धा ॥ स

१५

ल्यं वाचनादमन्यप्रयामित्वकानाया क्वावयामीति वाचा । ल्यं मीमामान्यप्रयकृत्वा लीजा
 नमाया गालिनी वाक्कदातं ॥ तदुक्तं माय ॥ श्रुतशोकामगुण
 मीमारुतगगथलाके ॥ सीसायस्मिन्जलव्यो भाद ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥
 दत्तापादायुजयुग्मावलम्बी मागमामिष्टनलोत्तु
 तिक्कथामपुत्री ॥ ॥ भाग्येयो यच्छालिनी सायसिद्धा ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥
 सूतनसूरुलया ल्मानं वात्तयलियविलसिते ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥
 उमनविलसिता ॥ उमनविलसितामपिनामास्या ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥ थद्वता ॥

[illegible][illegible]

दधुद्वंशाननकाचिता नवाः घायादिहस्मान्ननु ऊच्यते नवाः गतं द्वंशं ॥ ज्योतिष्य
 नायापनते नितमत्तं हूति ॥ ॥ अवेहिर्वैगमनितं जतो जने ॥ उच्यते मुक्तवनाधनायि
 तयगमनं वैगमनितं जतो जने ॥ समूहकाः कलिकलासूतं यदा वलकिना द्रुनमनः क
 लापिनः ॥ तदकं माद्यकाय ॥ श्रीयः यतिः श्रीमतिः ॥ सिद्धं जगन्निति ॥ ॥ जलाद्वतगतिर्ज्ञा १८
 वपिजसे ॥ मनागतविलाकिताद्रितहा विधीसगवता विधीसूनधनी ॥ शिवप्रणयिनी जला
 द्वतगतिः ॥ पूनामुसततं जले मर्मवयः ॥ समीपगिगिनः गिनः सूवसतामिति माद्यः ॥ ॥
 उज्जययार्तयकानीयकानो ॥ नवं तादृशी मादृशी कापियस्याः स्वकार्क विहायान्न लोके

[illegible]

न॥ १॥ ॐ ह्यमूनाविषमातिवर्गिनी तन्निचिविद्वथलोदस्रविका सहजनिमापसूतायना
 विक॥ कथयकथं वक्त्यामिमन्दिनै॥ अयिविऊदीदृशयग्रहनमितिहानवि॥ ॥ यमिता
 कनासजससारवति॥ चललीचना ॥ लवमल्लुतिमल्लितसून्दराधनसूत्रयितासुल
 सूत्रवावद्रविधार्थवनी यमितापुनारुवतिवागमृती ॥ अरितापसंपदमथपुनरवि
 पितिमाद्य॥ ॥ नननननविताहुमन्दाकिनी ॥ रुक्मिणवरासनाऊनाऊहवायुत्रमथन
 उठातठलायिनी ॥ यगगेंद्रनकपायादिनी ॥ रुद्रगुद्रनितमयमन्दाकिनी ॥ मन्दाकिनी
 उवयमूदितवदनतिनामवृत्तनलाकथं ॥ ॥ यमूदितवदनारुवमोत्रोत्रोत्रि ॥ ॥

जन२

नऊऊयय॥ किलतामलसीत॥ धनतित्रधनवधूत्रमनीयं विकणतिहसस्त्रिकलिसूत्राऊं
 मलिनमथापित्रसावसुत्रकं कथयकथं मुखतामनसं ॥ तवमुखतामनसं मूत्रगयाविति
 कथामञ्जरी ॥ ॥ यूठमिहूननमाय ॥ यद्वदकि ॥ कनकनचितसूत्राऊं ॥ यलसूत्र
 लितमूकालकृतासी ॥ किततिलकसूत्राणासायूठकं नरुवतिवदकस्यसूत्रमीदृक ॥ उग्रप
 टमग्रनवसकि ॥ अ॥ ॥ इतविलेविलेवितमाहनरीरुनी ॥ यलयिकलिक
 लासूत्रमूत्रका विषमवागगनात्कनपीठिता ॥ अरिसनयतिपीननितनिनी इतविलेवि
 तमिन्दुमुखीयियं ॥ रुद्रपृथमसूत्राऊं नितनूत्यतन्नितिरानवि॥ ॥ नयनययकाकसूत्र

विविधा ॥ अलि नवगुच्छं कुरु न विविधा कलकलकली सन रुन रुधा । कलयत विषय
 नवनगाजी मृगुपतिना आस्य दमिवराति ॥ विविध विहारं कुरु मविशति कुरु म ॥
 विविधमपि नामास्या ॥ तथा वच्छन्दा मालि ॥ विनतिविहीनैरुवति विविधमिति ॥
 ह्यो ह्यो मलिमाला किन्नापदमधि ॥ यागीन्द्र ददिह्माधवंतु किनीठाय काटिनिदुष्टारु २०
 कालयस्तुता । अर्धरुनया या १ पादाङ्गनखाती नाऊनलिमाला दुःखादवगाता ॥ यक्षा
 मलमौली नक्षापनक ॥ तिच्छन्दा म ॥ ॥ नननयवलिगुरुकामदला ॥ तव सखि
 सुखमरु कामदलाः प्रियवनललिता गुलेत्रनकेशमधुनिपूनयमयपाठमस्या ॥ सुखि

मारुदामकदिका ॥ अलीनामा धानयवृत्रकुरु मसू नमकदिका ननै विषय
 स्मितयसप्रतिमनूत्यटी नधरावृ ॥ पिका लीकं कोली कलकलनवानिदु कति
 हाधुगी म ॥ धीतस्मिन्वाला ददयमवला कथं वदनकुरु ॥ पि ७ वृ ना तीधरु
 वतिवमिर्ज मना हलकानन ॥ तिर्गुरु ॥ ॥ उर्क विद्वद्भिर्मनसत्रवगे
 रुल्लदामय सिद्धि ॥ गुलागी तं पथिद निगदभायु प्यलाव प्यराजा वकुंथा
 वृष्टसितलवसूधा सुयमाला किर्तय ॥ दिद्यैत्वया तस्मै नमः सुखय प्यसं
 भावदयं नूनीतत्वया कमलदललसत्सुल्लदामा प्यिर्तय ॥ गत्यला कानी

एक ठितकदनेयक माला कर्मसमिति कृन्दा मञ्जरी ॥ ॥ स्तुता गुन
 न विरुये ॥ गार्दूल विडो ठित ॥ न क्कामी रुधने तथाम् ॥ पूर्यं कलयं न वा
 यासादं विहाय य ॥ न वद ॥ न नाथ ॥ गायी य ॥ काय कि नु रुव न म
 तदनिर्गं स सा नद ॥ कानन य ॥ अयं न दिथ न काल कलिर्त ॥ गार्दूल विडो
 ठित ॥ आवासा विविनायत प्रियसखी माला पिता ला यत ॥ तिगीत ग
 विन्द ॥ ॥ चत्सुर्गुर्वकामतनस तत ग ॥ अत्र नु विमल कदा ॥ सो नया
 कार्कं दिन कन किन ॥ न म्लान मान न देव दृष्टी नामा द्वादस मृत नू वि हि

तिमिरतनय प्रदीपक कलयतु रुत्रिपदं सदा गुरु ॥ ॥ मूनि गत्र विनति प्रहामोच गो ॥
 अति विनति न धम जीव प्रदा निरुत तिमिर वाट पाठ अत्रा ॥ कमल वन मूद निदाने लि
 र्यं ऊय तिऊ गतिरानुराखत्यरा ॥ मन्दा कि न्य प्रनिदगर्नि मन्दा कि न्या सदा ययति कृता वि
 णाष ॥ ॥ अत्रुर्गुर्गलं खलु मो कि कदाम ॥ यगस्कन मय य म उऊन स्य यद कमनं क सुख स्य
 चदायि ॥ इदी धन नाम सु मो कि कदाम रुव खलु मूकल यमृता ॥ वल कि विना मून
 द्य अत्रु र कि न्ति र्गं यु ॥ ॥ ऊनो ऊनो व स क च न र्द र्द ॥ कि म न दी द ॥ वि सुन्द न
 र्देवे क च ल न पि क प्र गय ति ॥ नू ल द्वि व ल्म द क्रि ल नि ला य सा ॥ ॥ नो न र्दे वि या नि यत

जातय नाधिय नखल समविर्तत कुम्हलने । यदसुमसि सताया जादासुत ४ कल
 कमलद ॥ यमल क्रमा ॥ ॐ इन्द्रविगमे ४ किञ्चिदत्र गमेविति सत्रविश ॥ ॥ मरुता ॥
 य ४ सागधरुवमरुमयुन ॥ वीजधीनधानगरीनरुनिताही इन्द्रकृष्ण नीलगिनीदु
 युक्तिकार्क । यीनप्रायदसुकविश्रुतिताई नृत्तंयतमरुमयुनाघनवृद्धा ॥ हतातति २२
 कन्दितमाक ॥ विषणु ॐ तिनयव ॥ २ ॥ जरीसुजीखलूनूविनारुवगगा ॥ गयान
 यायदवधिकया विमया । अलाकिसाघननूविनातनूयुति ४ मनावहिरुदवधि विम
 रुर्णजलीरुवदयूनपिरुनसीदति ॥ पनस्यनैपनिद्रुपितस्यपिखत ॐ तिसाघ ॥ ३ ॥

कना ३

नूविनायानामाननैयरावतीति ॥ ॥ सजसाजगेरुवतिम ३ राविनी ॥ इन्द्रयस्ययस्य
 मनाविनादिती गृहिणी गृहं रुवतिम ३ राविनी ॥ कवितामताचत्रसनाग्रममिनी खलुतस्य
 नासकमलाम्बु ॥ अमृता मिठीतलकनैलालयत् ॥ इति कनाम ३ नी ॥ अस्या ४ कविना
 धूराविनीतिर्नैली ॥ सूतदितीति कविज्यवाधितति नाम क्कान्नी ॥ ५ ॥ मानाङ्कोविद
 लयति ४ यद्विनीय ॥ इन्द्रमामयगतमूत्सुकानिकामं दृष्टिद्विस्त्रितवयसात्रसायन
 नाहाधत ४ पुनत्रपिसामृगकी साकृदंनयनमन ४ यद्विनीय ॥ सामादाकसुमत
 नूत्रियाविबिका ॐ तिकिवाताईनीय ॥ ५ ॥ रुवतिम ३ नी ॥ अस्या ४ कविनी ॥ कपि

तक ॥१॥ तत्रैकत्रीत्यथावद्वतिमृगान्धमुखीनर्ममुखीच ॥ रुद्रतुतदागधरुद्रधावि
म ॥ शुक्लसूदृष्टिकलिकोतुकम् ॥ गुणुजुजवीर्यहरहरविमृदा ॥ ॐ तिष्ठन्नाम ऊ
त्री ॥ ७ ॥ सज्जसाज्जमेचकथित ॥ कलहंस ॥ श्रुतमश्रुतहिकलया मिचलोना हृदयन
वद्विविधूर्नमधूर्नवा ॥ ॥ पत्नीसर्मसखितदकपनाया वक्रवत्तरुक्रुक्रुती कलहंस ॥
यमूनाविहानक्रुक्रु कलहंस ॥ ॐ तिष्ठन्नाम ऊत्री ॥ १ ॥ ॐ रुद्रननततगावद्विका क्राधिरि
ह ॥ जनइतिहिनकायकावापरा उऊऊलनिधिवृद्धोनिदानंघर्न । ममनयनचकात्री
मिर्मा मादय नमधूमिपूमुखययस्यसावद्विका ॥ ॐ रुद्रनधिगमे किंचिदवागमेविति

२५

[illegible]

मागता नव कृतं पवि दत्त सकलान् । राजन रुच्य मन्त्र मिह राजन न स वदुना का
 उ सर्वग पय पतिर्न विसृजति सृजन ॥ संप्रति लवजु म्म गन के १ कथ म प्रिल द्यु
 नि । ॐ निरुत वि ॥ वीमदल मि किर्णो ॥ ॥ मन्दाका का म रुन तत म ग म्म १
 पल्लु नि दि ॥ का वा वि आ द ल य वि वि ता मा द दा यी ऊ ना नी का वा की हि लू द्यु म नि २५
 चि ते द्वा नि ध म्म वि रा ति । या व क्क ली कू उ क वि दू षी यु य सा न द्र त्रै ण म न्दा का का
 वि पू ल उ ध ना का व द यी ति भ ति ॥ म न्दा का का यु व न क व यं चि ती री मि त्र क ॥
 ॐ ति का लि दा स ॥ ॥ भा रा भा भा य ल ग व लि ता व द रि द्वा वि णी ति ॥ म म्म द्वा णी
 रु २

ॐ ए प ना डि ता ॥ द नू सू त रु ति नी मृ ग लु क ता स ना स्म न रु न न म दी मि त्री ण व न न दि
 नी । डि उ ग द य रु ना प ना उ म ल्य म्म १ गुरु मि रु न व य रु ना म प ना डि ता ॥ न यू ग ल
 न स ला ग ॐ ए य ना डि ता ॥ इ रु न ला क न ॥ ॥ लो ला णा म्म नि वि णा मा म्मो क्का
 वि रु णे य गा ला ला म न्म थ र्म आ म्म सी रु ए न ता म्मि का था त ध नि मा वि दू वी त म्म
 दि ता म्मि । ग द्वा लि ग न यू र्ध य म्म न क म र्ध व शी व म्मि द न वि स रु प रु थ र्म ॥
 म्म । यं थो व न ल म्मि वि दू वि द म्म लो ल मि रु द्वा म्म १ नी । ल ल ति द्वा वि ना मा म्म १ ॥
 ॥ ॥ उ क र्म यं लो क म त न म्म ग्म ग्म वा र्म नी ॥ म्म भा द्वा क्का म्म ग्म न व ला रु म्म ना

मातिथं निरीपत्रिचयनी माधीकेश उषाशमयी मृदुपतिकीर्तिः ॥ इत्युक्तं सोराग्यं
 आकाकलयवलकीवत्की ॥ आशुभ्रमी निर्द्वन्द्वमधूपा लायाभीतेनिति कन्दामभ्र
 नी ॥ ॥ मारुभागावतिगनरा कंचलोच ॥ उद्यदिशुत्तवत्तलत्तुदृष्टिपूत्र
 व्याह्रासिलीनिकनरुयकृद्धानवसी ॥ किंस्यामस्यं निवदिवनिधायी गवीत्र कापा
 दयक्षिपतिगनरा नमानाह ॥ ॥ श्रीश्रीगवक्ष्यविनतिं त्रसंवाधा ॥ आविर्भूतं
 कृष्णमसूत्रनियुमा ला आन ॥ कृष्णराशिरुवदसंवाधा ॥ आप्रक्ष्मा मासस्त्रितवदनस
 माजा साध्यानन्दा निर्द्वन्द्वनिधिलारुन ॥ वीर्याग्नौ यनकलतिप्रतिप्रसाक्षि फ ॥

२६

॥ इति २ ॥
 ॥ नऊरुऊलागुनूवति कन्दवती ॥ ॥ इत्युक्तं नवगनयति
 लाववती यदि नमतपियायल यि कन्दवती ॥ नऊरुमि तस्त्रया पिय ४ सूत्रसं
 तवदयितकृत ४ कृपित उवगत ४ ॥ ॥ उक्तं वसंकितलकं तलकाऊगे गशा लामा
 कृत्रयकवय ४ सूत्रसंमिरुते लोकं वसंकितलकं नितनामृदूनी ॥ मामिन्द्रकाकिलमधूयत
 चक्षितन वाल्मीकधेयथयसि यथयल मता ॥ चक्षुजयमिगवलु गदाहिघातसंदूक्ति
 मात्रयूगलस्यसूयाधनस्यतिरुदनाया ॥ ॥ शिखिद्वतयमूदितामूतिकथयेन ॥ उक्तं
 धितीति कविनाऊवसूधन ॥ ॥ सामनसेवगदितामधूमाधवीति ॥ ननुगंमस्यति ॥ ॥
 य १

नततत गगयुः ॥ अनादीमुखीयै ॥ अलिगणिकलासुद्धनीणा ॥ शिवा ॥ अपतिनिविष्टः
 यी कृमात्रैवृत्तस्याखयममत्रमलेन शिवन्दासनायैवकुपयि ॥ कनादीमुखीयैवृत्तमि
 धासुत्रसखगकृतालापनादीमुखीयमिति कथ्यामश्रुनी ॥ ॥ यद्वनगकलिकान
 तरुनलघुग ॥ मधुमयवचनागजगतिवचना मृदुमधुनह ॥ चवकमतदृष्टाकि २०
 त्रयतनमनी मुनिजनकयिनी मनसिजकसुमपुलकलिका ॥ अथयतिकसुमप्र
 हनलकलिकतिकथ्यामश्रुनी ॥ ॥ हृदयवदना रुजसनागयुगल ॥ कामल
 तनूः ॥ प्रलयिनीमधुनवाणी यद्वनयनास्मितवती वलितमध्या ॥ हृदयवदनाकिमुमिलि

पि। सकलविद्वाना ॥ आसिप्राणदं प्राणिनीय ॥ हृदयममरुह्याकृतस्याः ॥ पाद
 पद्मंरुज्याः ॥ विसमसूत्रकं सामहाद्यातित्रमन्दमन्द ॥ हृतिर्गुरुः ॥ ॥ हृदयः ॥
 अथाद्यादृष्टाकनाड्यकं ॥ कसुमितलताचन्दननानाद्यो विषलखाय ॥ गद्गलिल
 लितमस्माद्रुमत्रपदं वदुमालाय ॥ जातो धृतोचरुदा ॥ सफदिनवाकनां युथा
 विदिताः ॥ ॥ स्याद्वानल्ले ॥ कसुमितलता रुदिनी स्त्री नयो यो ॥ आयुहृद्गाली ॥
 मधुनमधुना प्रीतगुरु ॥ लिकाली ॥ याथागंरीवृत्तिरितरितः ॥ पूर्यमानापिनिलं
 । ॥ कंया ॥ हृदिकमलनयनं तं विनाप्राणवाधं ॥ हाहादहनः ॥ कसुमितलता लं कृतासेव

रुमि॥ कीउ कालिन्दी ललित लहरी वात्रि लिङ्ग क्रियाये त्रितिक्रिया मङ्गली ॥ ॥ नरैके
 जनासुगारु वतिन सुदारु वन नन्दन ॥ नवकुल दयसन्न मनू काकिका न मान दिनीव
 नमूनरी नवाहन समस्त वल्लवी मानसी ॥ ललित सुपीत वासस मुदा नहाव वक्र ॥ सु
 ली कमल विलायन मनसिन नन्दन नन्दनी रावय ॥ अहताधन धनस्य अधियः स
 भतमाया धनमिति रुद्रिः ॥ ॥ ॐ ननन चतुर्विंशत्युनात्रावमाचक्रत ॥ क
 थमिह मुखैर्दभन समानम्य निष्ठासुता मलिनय सिद्धिधमूकस्य मनसि पनी
 वाधस ॥ समुद्रियदित वासिका यस्मै ॥ ॥ ॐ ननन चतुर्विंशत्युनात्रावमाचक्रत ॥ क

२८

मधवृत्त हिमकनमिव विवि ॥ अत्र लिख्यते नन्दन विविल कर्ण ॥ ॥ ॐ ननन चतुर्विंशत्युनात्रावमाचक्रत ॥ क
 ॐ तिष्ठ कनीचतुर्दश क्रिया आतिश ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥
 मालिनी चर्मक शनी ॥ निक नाना मे निगुण ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥
 लागथा ॥ लिलो शर्ल च विपिन तिलकं ॥ यमै मालिनी ॥ चन्द्रो धात ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥
 यैवदश क्रिया यद्यमालिता कायविक्रमे ॥ ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥
 गित गित सिसृग सविद लिखति स्म नति चतुर्न मलिकमधिविधु कला ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥ अथ यद्यदश क्रिया उच्यते ॥
 गलगनल मर्षियस्यतम रुमह नरु ॥ ॐ ननन चतुर्विंशत्युनात्रावमाचक्रत ॥ ॥ गतन सतनू निह निवसति पुनत ॥

मनाहन २

मिकन्यवित् ॥ विमलहरं ललितं स्यात्तामिति ॥ ॥ श्रीधाराय प्रमोदो विद्यामारुतवच्चलितखा
 ॥ जाग्रदालाक्षिवक्त्रिओरुत्तिथ्यात्मानारुकांनी कोमदीरिहलेनर्ववाधयनी ॥ पश्ये
 वा ॥ भरुते कामात्र कूठाकूट गंगपाठा कलालविभूषिकानवाचलखा ॥ वन्दते
 नीपतः पादाग्रसूत्राधीनमूढ ॥ ॥ इति नन्दप्रदीप ॥ ॥ ॐ नन्दनमयया ॥ ॥ श्रीमालि
 नीसाय सिद्धा ॥ तदयद्वित्तिलुं राहल्याकृतगुं रा. यविसुमदितर्क रावातिर्दहार
 वानी ॥ उयतिदन्तुमूले मालिनीवीनवगा ॥ अतिवलिता दम्भमावपुकाचलुहासा ॥
 अपिहृत्तगसमीपादृत्यर्तं मयूत्रमिति कालिदासः ॥ ॥ नऊरुऊने ॥ सुकंगनमि

२९

उक्तातर्कनृत्यलूखेरुसतालपदका. नन्दानन्दगन्धिगामयल्लेखा ॥ गंगपा
 लानीलीलालालायल्लिन्दाल्मऊर्के ॥ ॥ इति नन्दप्रदीप ॥ ॥ लङ्कानन्दनीगयूग
 मिषूषत्रिदला ॥ नवनर्मदालहनिविनचित विनाद. पियवन्दनलखवनधूतय
 नागेशपविषिअनालिरिद्रूपनिकृतविहारा. सनसालताअथयतिहृदयमिहला ॥
 सऊनानथोषनदणकविनतिप्रला ॥ ॥ इति वृत्तवन्नाकर ॥ ॥ चनमगमनिलयूय
 गल्लगिकला ॥ सूनसुनिदुलितऊलत्रुचिबलिता. वरुजनिविनचितविविधकसूकता।
 अतिरुत्रललितविणविसुविमला. कलयऊयतिहृनगिनसिगनिकला ॥ विहृतहयल

द्युत्रथमिति शब्दिकला वृत्तिवृत्तनाकर ॥ ॥ मा मा मा मा म अदि के बि के ये ती ला ख ती ॥
 नीलाभया श्व इ वी ना गऊ का हा ग ही ना नृ ए ए च म हा व ही ती ला ख ती री न न न का वी ली
 विष्णवा भू धो क्रिष्णा का ना य द न्नी हा हा पा ठु ली प्र मूर क य रू ता का लः सि न् ॥ मा का
 के य रू था के प रू था का हा य हा था पी ना वृत्तिक ठा र व ली ॥ ॥ वि धि न तिल कं न म न नो ३
 रुता नी रु व ॥ वि धि न तिल कं क रू सि ती व रू क रि था ध रू मि व न नं न रू ध रू रु ली ला स्य र्
 ॥ म म पि नि ती अ स ग तः क र्थं म पि था वि धि त म धू ना म त सि आ पि ना रु त तः ॥
 न न रु रु रु ता सो रु व इ य मा लि नी ॥ व रू म न वि ष तः किं ग वी रू न धू लि किं रू ल लि त

क ठि ले ॥ क रु ले व लि दान नी । प थि यू व ति ऊ ना नी इ रु ल मा ल या स खि ज य ति त
 प त रू प रू लि नी ॥ स रु अ य सि अ मा नं पू ल वि रु न के अ रू नि रू ॥ ॥ न न म न न
 व रू च आ था त म त दि इ ॥ अ रु म वि दि त या ता रू क रु ल पा रु वा य त वि स न ति च आ था ता
 नि पू रू रु रु ॥ व रू प ति न रि मा नी रू कं त रु अ रू ग तः क थ म रि स न त द वा मा रु जी रु पि थ ॥
 अ रि न व रू लि ले हा रू रू मा रु लो रु मि रु वृ ति रू ॥ ॥ अ थ पा ठ म रु ता ॥ मृ प रू रू ग रु रु
 ग्गि ल लि त रू थ य किं ता रि रु ल म रु थ ॥ म रू ल लि ता रू ग ति ॥ य व ल ल लि त रू थ य म न रु थ
 ॥ ग नू उ नू त रू व ले वृ ति रू पि थि लि के का द रु रु ता रू क थ क रू व लू रु दा ॥ पा ठ ग व रु रु रु रु

द्याः ॥ ॥ मृषरुगकायथा ॥ ओदननाउरुमृषरुगजविलसितं ॥ निरुयमृषरुगकायथा ॥
 तमदनमदं रुकुगृहीतपूषरुलमयविठयलतं ॥ सूत्रसुतातठवजयुवतिनरिवृते पश्य
 कन्दमनमृषरुगजविलसितं ॥ हामक्रमासवधुविलसिन्नकमलमरी ॥ इति गद्यः ॥
 ह्यादिहचकितारुसामरुनपुनरुदनपुनरु ॥ यद्यतिनयेनकुंकाचिलीलात्यलनगता
 यीश्वरचकितावीश्वरमयलीलागिवदना ॥ ह्यकउविनामयकलिमिदंमिदंमिदं
 ललनं दृष्टवदुर्मिलितमिव ॥ उक्तयननपुनरीदृष्टहागवचकितामृषरुमृषरु
 गी ॥ ॥ चिरुत्तरुनपयउओनओन ॥ नयचिरुत्तरुनपयउओन ॥

दिनः ३

नागतः ॥ अवनडंमसीकाव नश्वरीकिनसिद्ध ॥ इति गद्यः ॥ ॥ ह्यादिहचकितारुसामरुनपुनरुदनपुनरु
 समरुवतियमृषरु ॥ उक्तमवायवृत्तकंरुवद्विपनीता ॥ तस्माद्विपनीतयथा ॥ तस्माद्विपनीतयथा ॥
 मृषरुविचयन्याअलीकायि ॥ इति गद्यः ॥ ॥ चयलावकुसमचरुका ॥ ह्यादिहचकितारुसामरुनपुनरुदनपुनरु
 ह्यादिहचकितारुसामरुनपुनरुदनपुनरु ॥ यद्यतिनयेनकुंकाचिलीलात्यलनगता
 कर्तुं ॥ चन्दनं चन्दनं वरुणकयूरंमलमानिला ॥ इति गद्यः ॥ ॥ समया ॥ समया ॥
 सायुगमविपुलासृता ॥ उन्नतसिद्धीद्यानी सायुगमविपुलासृता ॥ विवकविपुलासृता ॥
 सर्वविपुलासृता ॥ अविदासृता ॥ ह्यादिहचकितारुसामरुनपुनरुदनपुनरु ॥ यद्यतिनयेनकुंकाचिलीलात्यलनगता
 थचतउव ॥ उक्तमवायवृत्तकंरुवद्विपनीता ॥ तस्माद्विपनीतयथा ॥ तस्माद्विपनीतयथा ॥

पृ २

